॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

सागरमें रहनेवाली एक नन्हीं-सी मछलीके भीतर एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई। उसने अपनी माँसे पूछा कि मैं कई दिनोंसे 'सागर' नाम सुन रही हूँ, पर यह सागर कौन है और कहाँ रहता है? माँने उत्तर दिया कि 'सागर' नाम तो मैं भी बचपनसे सुनती आयी हूँ, पर मुझे उसके बारेमें कुछ नहीं पता। मैंने इसपर कभी विचार ही नहीं किया! चलो, अपनी सखियोंसे पूछती हूँ। उसने अपनी सखियोंसे पूछा तो उनका भी यही उत्तर था कि इसपर तो हमने कभी सोचा ही नहीं! हाँ, एक बूढ़ी मछली है, वह शायद सागरके बारेमें जानती हो। चलो, जाकर उसीसे पूछें।

कुछ मछलियाँ तो यह कहकर रुक गयीं कि आप ही उस बूढ़ी मछलीके पास जाओ, हमें सागरसे क्या लेना-देना? कुछ मछलियाँ तमाशा देखनेके उद्देश्यसे उनके साथ चल पड़ीं। सब मिलकर उस बूढ़ी मछलीके पास गयीं और पूछा कि यह सागर कौन है? आप इसके बारेमें कुछ जानती हों तो बतायें। बूढ़ी मछलीने हँसते हुए कहा—'अरी पगलियो! जिसमें तुम्हारा-हमारा सबका जन्म हुआ है, जिसमें हम रात-दिन रहते हैं, जिसमें हम सब जी रहे हैं और जिसमें हम सब एक दिन विलीन हो जायँगे, जो हमारे भीतर-बाहर सब जगह परिपूर्ण है, जिसकी सत्तासे ही हमारी सता है, जिससे हम कभी अलग नहीं हो सकते, और जो हमें अपने चारों ओर दिखायी दे रहा है, यही तो सागर है!'

कई मछलियोंको तो यह बात समझमें नहीं आयी। वे मौन होकर एक-दूसरेका मुँह देखने लगीं। कुछ समझदार मछलियोंकी आँखें आश्चर्यसे खुली-की-खुली रह गयीं। पर वह नन्हीं-सी जिज्ञासु मछली सागरके ध्यानमें खोकर 'चुप' हो गयी। उसे सचमुच सागरका बोध हो गया!

—परमश्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराजके वचनोंसे संगृहीत 'सहज समाधि भली' (चुप-साधन) पुस्तकसे।

प्रकाशक—गीता प्रकाशन, गीता-सत्संग-मण्डल,
कसौधन पंचायती मन्दिर (हरिवंश गली), गोरखपुर—२७३००५ (उ०प्र०)
सम्पर्क-सूत्र—093 895 93 845; radhagovind10@gmail.com